पहले2 तो समझाने वाला ही तीखा चाहिए। याद में मस्त हो तो वाणी में भी जौहर भरे। और चित्र जो है कि गीता का भगवान कृष्ण नहीं है ,शिवबाबा है। यह है क्लीयर प्वाइंट समझाने की। दूसरी सीढ़ी भी है। झाड़ और गोला तो है ही है। और शिवशंकर के भेंट का भी होना चाहिए चित्र। बस,यही चित्र काफी है। मुख्य चित्र हो। रामराज्य रावणराज्य का भी चित्र हो। चित्रों पर अच्छी रीति समझाना चाहिए। भक्तिमार्ग के गुरू लोग जो कि भारतवासियों को डुबोते हैं उनसे भारतवासियों को छुड़वाना चाहिए। तुम अच्छी रीति समझाओ तो फिर वो आप ही सेंटर खोलेंगे। समझाने वालों को योग ना होने से सर्विस जमती नहीं है। बाबा को तो ऐसा ही दिखाई देता है। बच्चे अच्छे चाहिए। याद की ही यात्रा मुख्य है जिसमें कि विकर्म नहीं होते हैं। आंखें बहुत धोखा देने वाली हैं। भल महारथी भी हैं नम्बरवार। फिर ऐसा भी नहीं है कि कोई इसी समय सम्पूर्ण बन ही चुका है। नहीं। सम्पूर्ण कर्मातीत बन जावे तो फिर यह तो शरीर ही नहीं रहे। आत्मा भी यहां पर नहीं रहे। बाबा खुद कहते हैं कि अभी तो समय है। फिर भी योग तो अच्छा ही चाहिए। खामियां निकालनी चाहिए। एक्टिविटी तो अभी तक ऐसी है जैसे कि बंदर से भी बदतर। वो क्या सर्विस कर सकेंगे। पहले2 तो सिद्ध करना है कि गीता का भगवान कौन है। साधु ,विद्वान आदि जो भी हैं कोई को भी पता नहीं है। उनको समझाने वाला तो चाहिए ना। वो तो सारा भक्तिमार्ग है। भक्तिमार्ग के शास्त्र पढ़ते रहते हैं। अब हम बाप से ज्ञान ले रहे हैं तो भक्ति के धक्के नहीं खाते हैं। समझाने वाला तो ऐसा चाहिए जो कि सर्विस करके और सेंटर जमाकर दिखावे। बाबा तो गांव ...का भी अनुभवी है ना। अनुभव तो इनको हर बात का है। ऐसी कोई चीज नहीं है जो कि बेची नहीं होगी। हर चीज बेची है। सब अपने ही हाथ से खरीददारी करते थे। यह खुद भी समझाते हैं कि यह गांव का छोरा था। पांव में चप्पल भी नहीं। फिर वानप्रस्थ अवस्था में शिवबाबा ने प्रवेश किया तो फिर वो ही गांव का छोरा विश्व का मालिक बनने जा रहा है। गांवरों से तो बहुत ही आये हैं। तुम बच्चों की तो सारा दिन ही बुद्धि में ज्ञान रहना चाहिए। तुम्हारा तो धन्धा ही यही होना चाहिए। और जो भी धर्म आते हैं वो सभी हैं बाइप्लाट्स। तुम बच्चों को बाप ने बहुत अच्छा समझाया है। धन तो खतम होना ही है।....बाप ने तो फट से सारा धन दे दिया ;क्योंकि विनाश का सा. किया था ना। विनाश देखा ,फिर राजधानी देखी तो स्मृति आई कि यह पैसे क्या करेंगे?बच्चे आदि भी सभी थे। साथ में भी बहुत बच्चे आये। भूखे तो नहीं मरे ना। कोई तो नंगे पांव भागे। कोई तो साथ में पैसे आदि ले भी आये थे। खर्चा होता रहा। आमदनी तो थी नहीं। बच्चों को पता है। कई पूछते भी हैं कि तुम कैसे भागे?भट्ठी कैसे बनी?सो तो हंगामा होगा ना। और कोई की ताकत थोड़े ही है। बड़े2 लखपतियों की स्त्रियां भाग आती थीं। पार्टीशन भी पीछे हुआ था। तो गरीब भी साथ2 में (स्वतः) ही आते हैं। साहुकार देते हैं जिससे ही सभी चलता है। गरीब के पास पांच है और साहुकार के पास लाख है तो भी दोनों का बराबर पद है। बाप तो गरीब निवाज है ना। तो गांव की सर्विस करना बहुत ही ईजी है। चित्र तो बन ही रहे हैं। बहुत अच्छी सर्विस हो सकती है। हर एक गांव में सेंटर जमा सकते हो। चित्र भी तो हजारों ही चाहिए। घर में भी जबकि मित्र सम्बंधी आदि आवें तो बहुत सर्विस कर सकते हो। साहुकारों में भी अच्छी सर्विस हो सकती है। वहां सबसे सहज है। सर्विस करना है। हर इतवार को श्मशान में जाकर समझाओ कि यहां तो अकाले मृत्यु होती है वहां नहीं होती है। सर्विस तो बहुत है ;लेकिन करने वाले चाहिए। अभी तक भी दिल पसंद सर्विस थोड़े ही करते हैं। याद की यात्रा में जो तत्पर होंगे उनको ही सर्विस का बहुत हुल्लास होगा। गिरते भी बहुत रहते हैं। अच्छे2 बच्चों की भी नाम—रूप तरफ बुद्धि जाती है। क्रिमिनल आई हो जाते हैं। कोई गन्दा क्रिमिनल आई वाला आवे तो उनको तो थप्पड़ मार कर भगा देना होता है। वो शक्ति होनी चाहिए। अभी तो वो नशा चढ़ा हुआ है। गुडनाइट बच्चों को बाप की। अब विदाई। ओम।